चुटकिया की चुटिया

शीतल पॉल व सोनिया मंडल
चित्रः तापोशी घोषाल

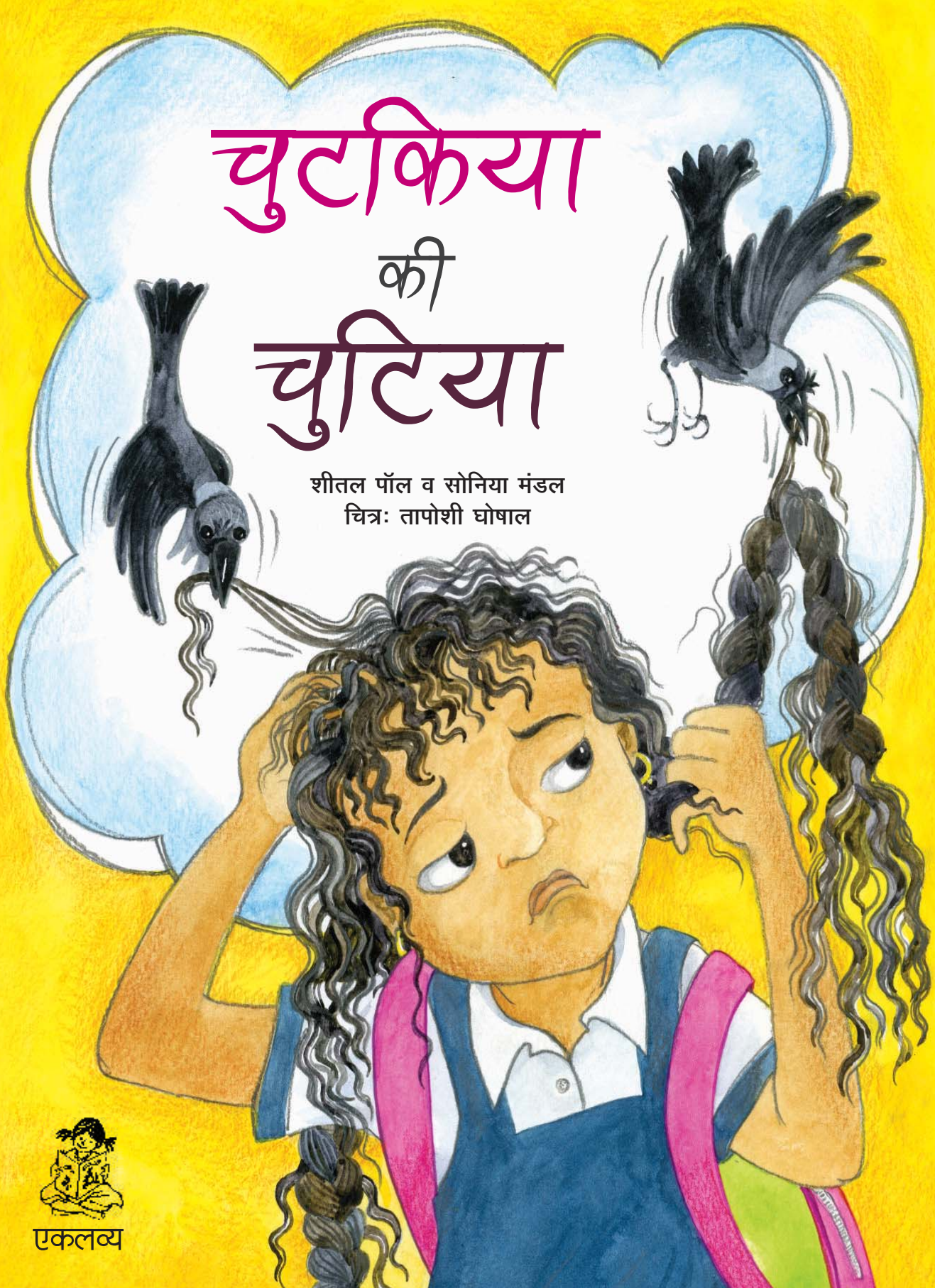

एकलव्य

चुटकिया की चुटिया

शीतल पॉल व सोनिया मंडल
चित्रः तापोशी घोषाल

एकलव्य

चुटकिया की चुटिया

CHUTKIYA KI CHUTIYA

कहानीः शीतल पॉल व सोनिया मंडल
चित्रांकनः तापोशी घोषाल
डिज़ाइनः कनक शशि

© कहानीः शीतल पॉल व सोनिया मंडल
© चित्रांकनः तापोशी घोषाल

दिसम्बर 2016/ 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 220 gsm पेपरबोर्ड (कवर)

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-85236-18-1
मूल्यः ₹ 45.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल, फोनः +91 755 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया 100 gsm मेपलिथो कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

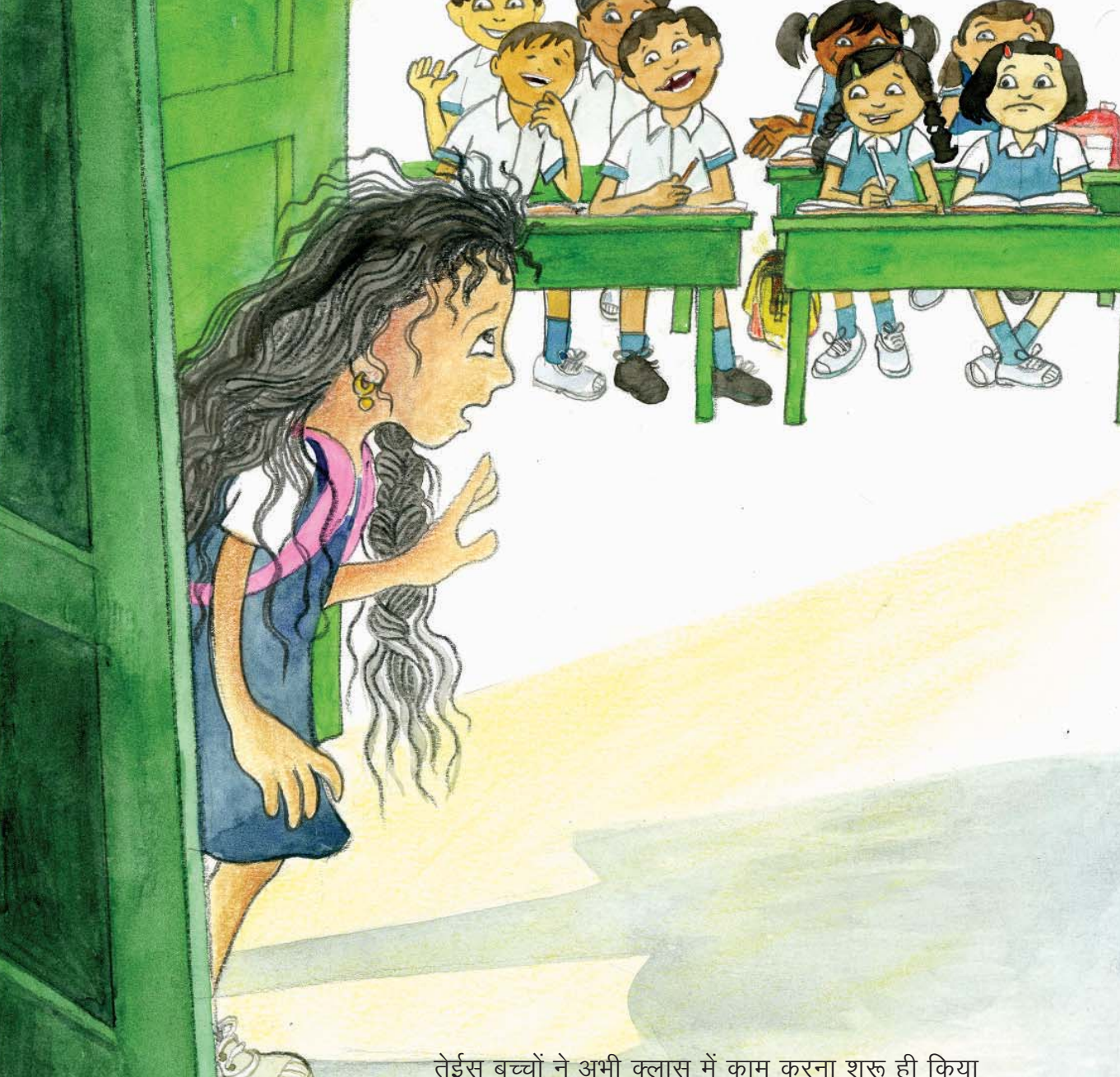

तेईस बच्चों ने अभी क्लास में काम करना शुरू ही किया था कि दरवाज़े पर एक आवाज़ आई। हवा में लहराती, घनी, लम्बी पर खुली चुटिया वाली एक लड़की खड़ी थी।

“मैं अन्दर आ जाऊँ?” उसने पूछा। सब ने अपना काम रोका और हैरानी से उसके बालों को घूर-घूरकर देखने लगे। ऐसा कैसे हो गया उसके साथ! मानो जैसे उसको बिजली का कोई तगड़ा झटका लगा हो जिससे उसके सिर के सारे बाल कड़क खड़े हो गए थे।

"क्या हुआ तुम्हें गुणिया?" क्या गली में किसी बच्चे के साथ लड़ाई हुई! तुम्हें पता है ना कि साफ-सुथरी दो चोटियाँ बनाकर स्कूल आना होता है।

उसने हाँफते हुए बोला,
"मैं, मैं... मेरी मम्मी ने मुझे सुबह-सुबह उठाया और

बालों में तेल लगाया,
फिर बालों को धोया,
फिर बालों को सुखाया,
फिर बालों को काड़ा,

फिर जाकर चुटिया बनाई और इतने में, मैं स्कूल के लिए लेट हो गई...

...और फिर जैसे ही मैं स्कूल के लिए घर से बाहर निकली, तभी कौओं के एक झुण्ड ने मुझ पर हमला किया!" सभी बच्चे उसकी बातें गौर से सुन रहे थे।

टीचर ने उससे पूछा, "भला कौओं के झुण्ड ने तुम पर हमला क्यों किया?"

गुणिया ने नाक ऊँची करते हुए कहा, "शायद उनको मेरे जैसी काली चुटिया चाहिए हो!"

"या शायद उनको तुम्हारे बालों से नारियल के तेल की बू आ गई हो, जो तुम्हारी मम्मी थोप-थोपकर तुम्हारे बालों में लगाती है," तरुण ने उसे चिढ़ाते हुए कहा। यह सुनकर सभी बच्चे हँस-हँसकर लोटपोट हो गए।

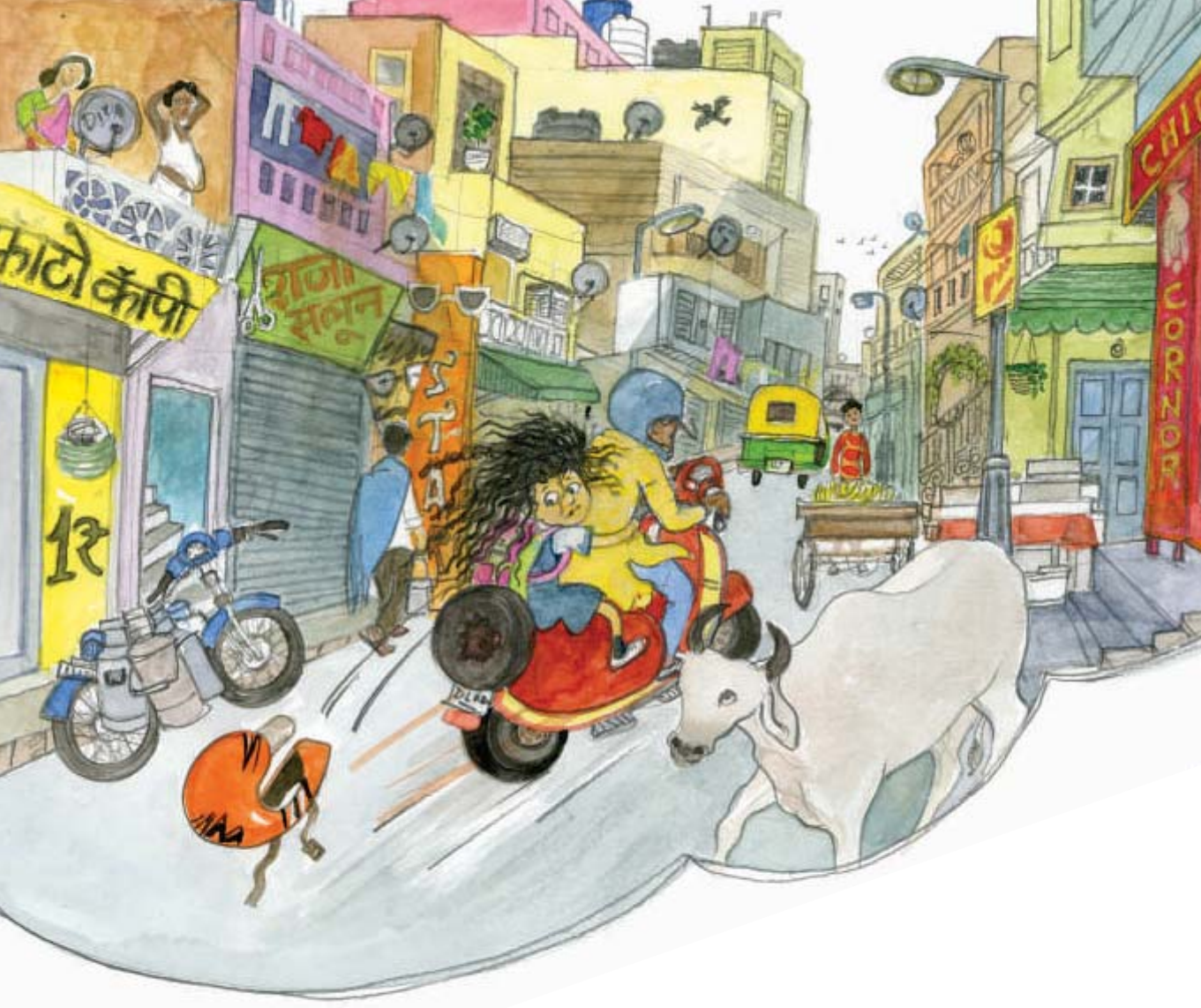

अगले दिन फिर से गुणिया के बालों की हालत कुछ गड़बड़ थी। बाल इधर-उधर उड़ रहे थे और वो आज फिर से देर से स्कूल पहुँची थी।

उसको देखकर टीचर ने पूछा, "अरे, आज क्या हुआ गुणिया? यह मत कहना कि आज कबूतरों ने तुम पर हमला बोला!"

नहीं नहीं... आज तो मैं बिलकुल तैयार थी कौओं और कबूतरों से लड़ने के लिए, अपने पापा का हेल्मेट जो पहन रखा था मैंने। पर रास्ते भर इतनी ज़ोरों की हवा चली, शाएँ-शाएँ, खूब तेज़ वाली हवा कि मेरा हेल्मेट उड़ गया। मेरे सारे बाल खराब हो गए पर मैं बाल-बाल बच गई। वरना मैं भी उड़ जाती!

बच्चों ने देखा कि बोलते समय गुणिया की आँखें और बड़ी हो गईं मानो जैसे अभी-अभी हवा में सैर करके आई हो! गुणिया ने सभी को बताया कि उसने अपने पापा को कसकर पकड़ लिया था, इसलिए वो बच गई।

टीचर ने उसकी गड़बड़ पकड़ने के अन्दाज़ में कहा, "पर तुम तो सिर्फ दस गलियाँ दूर रहती हो, और आज तो अच्छी धूप निकली है..."

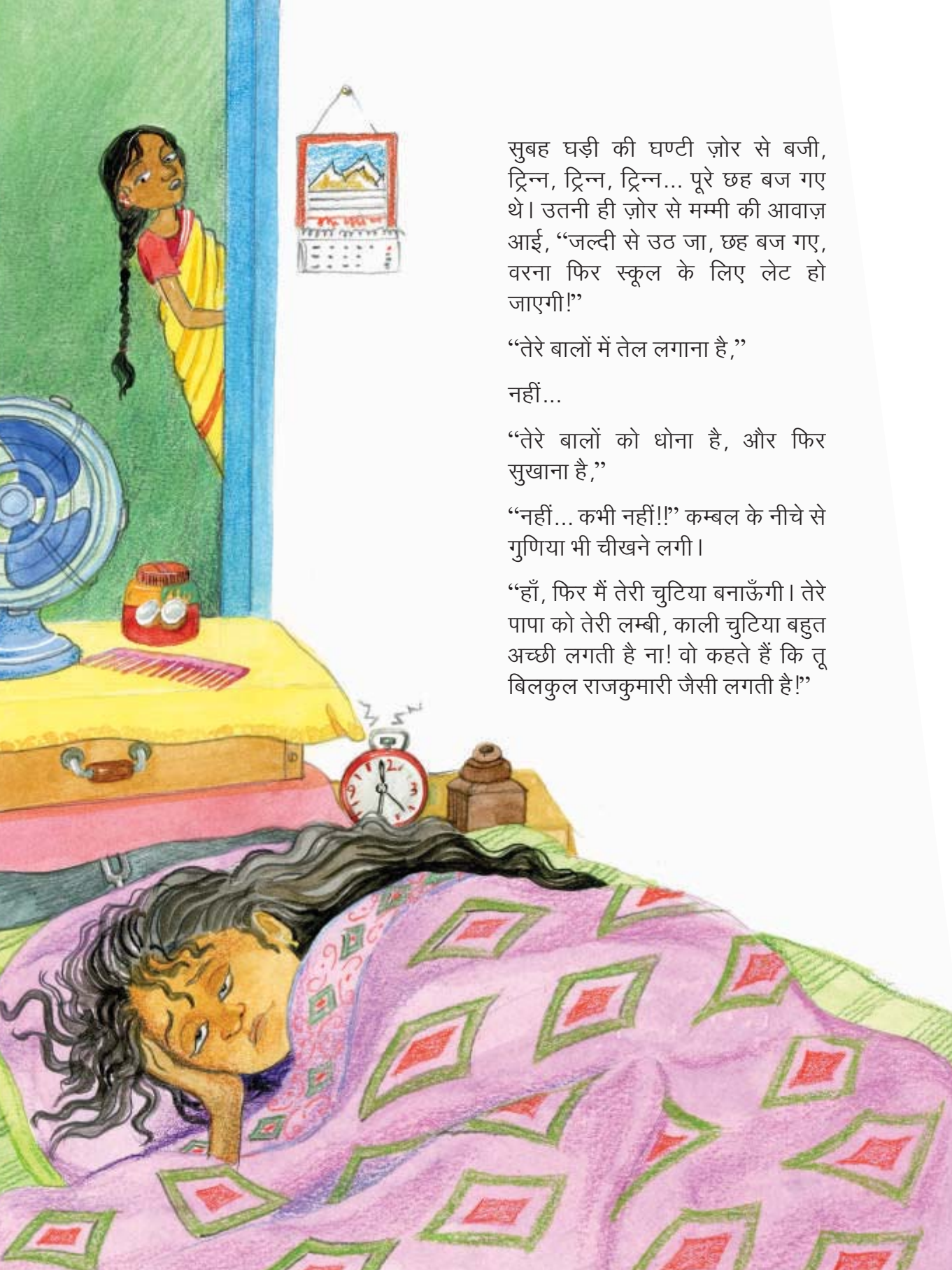

सुबह घड़ी की घण्टी ज़ोर से बजी, ट्रिन्न, ट्रिन्न, ट्रिन्न... पूरे छह बज गए थे। उतनी ही ज़ोर से मम्मी की आवाज़ आई, "जल्दी से उठ जा, छह बज गए, वरना फिर स्कूल के लिए लेट हो जाएगी!"

"तेरे बालों में तेल लगाना है,"

नहीं...

"तेरे बालों को धोना है, और फिर सुखाना है,"

"नहीं... कभी नहीं!!" कम्बल के नीचे से गुणिया भी चीखने लगी।

"हाँ, फिर मैं तेरी चुटिया बनाऊँगी। तेरे पापा को तेरी लम्बी, काली चुटिया बहुत अच्छी लगती है ना! वो कहते हैं कि तू बिलकुल राजकुमारी जैसी लगती है!"

गुणिया ने सोचा कि ऐसी कौन-सी राजकुमारी होती है, जो अपनी नींद पूरी नहीं कर पाती, जो रोज़ाना स्कूल देरी से पहुँचती है, जिसकी चोटियों को बच्चे हमेशा खींचते रहते हैं, जो अपने बालों में ठीक से खुजली भी नहीं कर सकती और जिसके बालों में तेल की बू से उसके दोस्त दूर भाग जाते हैं। मुझे राजकुमारी नहीं बनना। मुझे अपने बाल बिलकुल अच्छे नहीं लगते!

उसने मम्मी को समझाने की बहुत कोशिश की कि आज उसके स्कूल में उसको साधु बनना है इसलिए बाल बनाने की ज़रूरत नहीं होगी, पर मम्मी अब उसकी एक नहीं सुनने वाली थी।

हर बार की तरह आज भी गुणिया रास्ते भर अपने बालों में खुजली करती हुई स्कूल पहुँची।

इतने लम्बे बालों में उसको बहुत गर्मी लगती थी, खूब सारा पसीना भी आता था। इन बालों की वज़ह से वो ज़्यादा देर तक सो भी नहीं पाती थी। पर सबसे ज़्यादा नापसन्द था वो नारियल का तेल जो हर सुबह उसके सिर में पानी की तरह बहा दिया जाता। वो हमेशा स्कूल आते-आते अपने बालों को खुजलाते-खुजलाते पूरी तरह खोल दिया करती थी। और बच्चों को लगता था कि उसको बिजली का झटका लगा हो!

सोचो, आज कौन-सी कहानी सुनाई होगी गुणिया ने!!?

पर गुणिया को एक डर भी था। अगर उसके पास बताने को कहानियाँ ही खत्म हो जाएँ तो! अब उसको कोई पक्का इलाज सोचना ही होगा।

उसने बालों को खुजलाते हुए सोचा, "क्यूँ ना मैं मम्मी की तरह बालों में मेंहदी लगा लूँ? इससे बाल हमेशा एक जगह चिपके रहेंगे! या पापा की कोई टोपी पहन ली जाए? इससे मेरे बाल बिलकुल हिलेंगे-डुलेंगे नहीं और मैं अपना कीमती समय सोने में और खेलने में खर्च कर सकती हूँ! वाह-वाह!! कितनी आसान हो सकती है ज़िन्दगी!"

वो सोच ही रही थी, कि तभी उसका पड़ोसी बोका हाथों में बड़ी-सी कैंची लिए उसकी ओर आया और ज़ोर-ज़ोर से चिढ़ाते हुए बोला, "चुटकिया, चुटकिया"।

"मुझे चुटकिया मत बुला! हुह!" दोनों चुटियाओं को पीछे फेंकते हुए गुणिया ने गुस्से में कहा।

"दो-दो चुटिया हैं, तभी तो चुटकिया है," बोका ने हँसते हुए कहा। "अगर नहीं पसन्द यह नाम तो कटवाले अपने बाल। जब तक चुटिया है, तब तक तुझे चुटकिया ही बुलाऊँगा!"

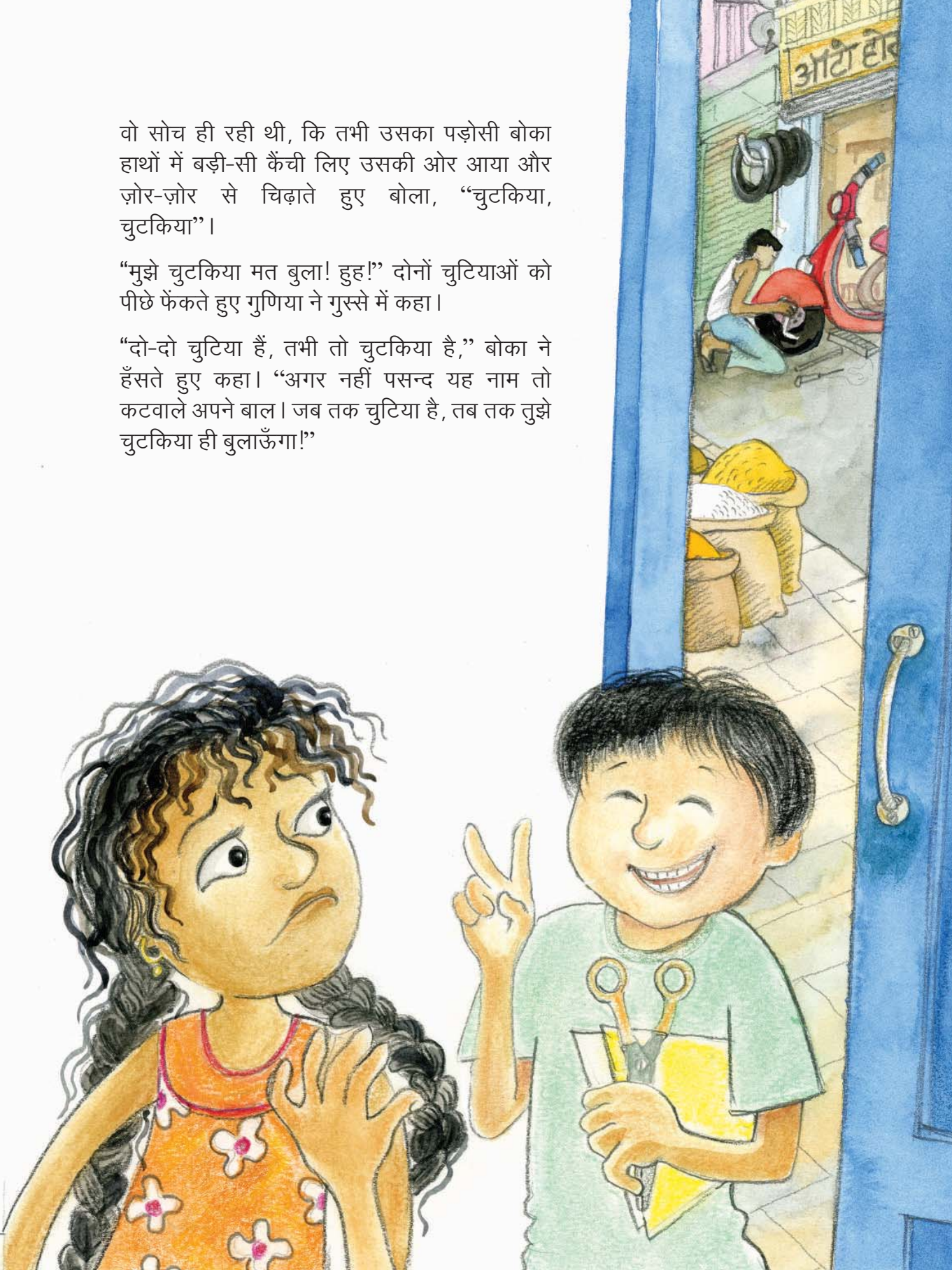

यह सुनते ही गुणिया की आँखों में चमक आ गई! उसको अपने बालों से छुटकारा पाने की तरकीब मिल गई!

उसने अपनी लहराती चोटियों को आगे करते हुए बोका से कहा, "तुम ही काट दो न मेरे बाल! दिखाओ अपनी कैंची का कमाल!"

सुनते ही बोका खुश हो गया। पर उसको यह डर भी था कि गुणिया के पापा को पता चलेगा तो उसकी पिटाई पक्की। पर गुणिया ने बोका को समझाया कि किसी से डरने की ज़रूरत नहीं है। किसी को पता नहीं चलेगा कि उसके लम्बे, काले, घने बाल कैसे छोटे काले घने बाल हो गए!

दोनों भागे गुणिया के कमरे में। बोका ने एक हाथ में उसकी एक चुटिया और दूसरे हाथ में कैंची पकड़ी और कच कच कच कच चला दी कैंची!!

गुणिया के पैरों पर उसकी चुटिया के बाल गिर पड़े। उसकी बड़ी-सी मुस्कान से पता चल रहा था कि वो इससे पहले इतनी खुश कभी नहीं हुई! बिना साँस लिए बोका ने झट से उसकी दूसरी चुटिया पकड़ी। पर तभी दरवाज़े पर ज़ोर की खटखटाने की आवाज़ आई।

डर के मारे दोनों बर्फ की तरह जम गए। कौन आया होगा? मम्मी तो नहीं? गुणिया ने पलटकर बोका की तरफ देखा तो वहाँ कोई भी नहीं था। बोका तो डर के मारे पहले ही खिड़की से भाग निकला। अब वो अकेले ही रह गई थी।

थोड़ा सोचने के बाद आखिरकार गुणिया ने दरवाज़ा खोला।

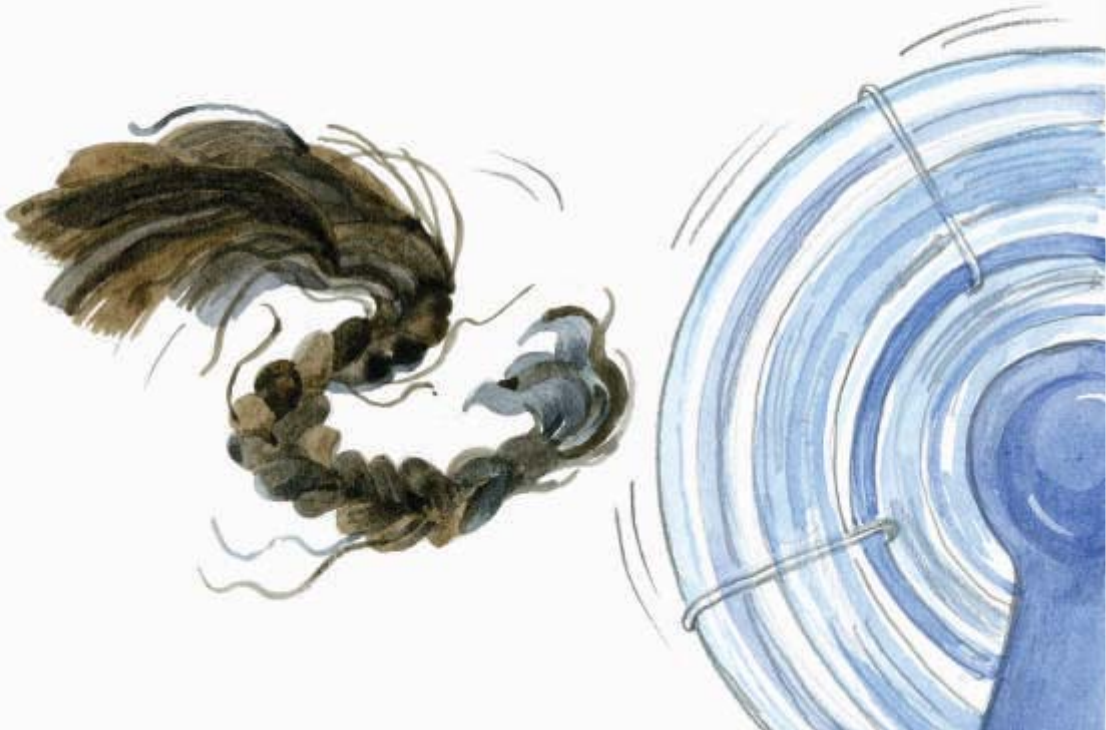

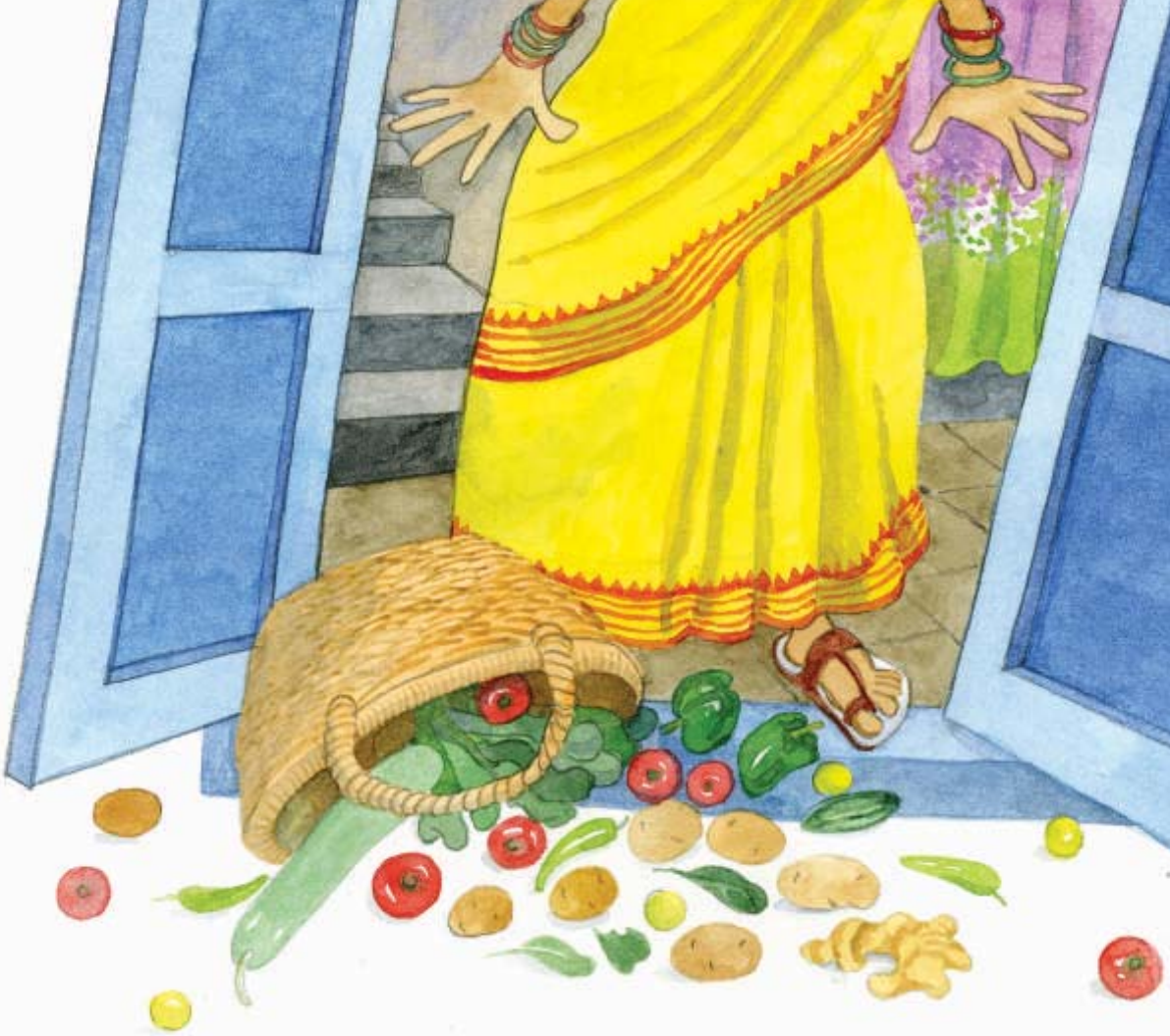

मम्मी के हाथों से सब्ज़ियों से भरी थैली धड़ाम से नीचे गिरी। यह कौन है! गुणिया की आधी चुटिया लहरा रही थी और दूसरी उसके पैरों के पास रखे पंखे के आगे पड़ी थी।

इससे पहले कि मम्मी कुछ कहती, उसने फटाफट बोलना शुरू कर दिया, "मम्मी-मम्मी, मैं तो हवा खा रही थी, और थोड़ी देर बाद पंखा मेरे बाल खाने लगा। मैंने अपने बालों को ज़ोर से खींचा। पंखे ने भी मेरे बालों को खींचा और बाल अटक गए। फिर मैं बाल छुड़ा ही रही थी तभी आप ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाने लगीं। मैंने सोचा अगर मैं दरवाज़ा नहीं खोलती तो आप गुस्सा करतीं। इसलिए मैंने चुटिया ही काट दी।"

मम्मी का मुँह खुला का खुला रह गया। वो ज़ोर से चिल्लाईं, “गुणिया के पापा... !”

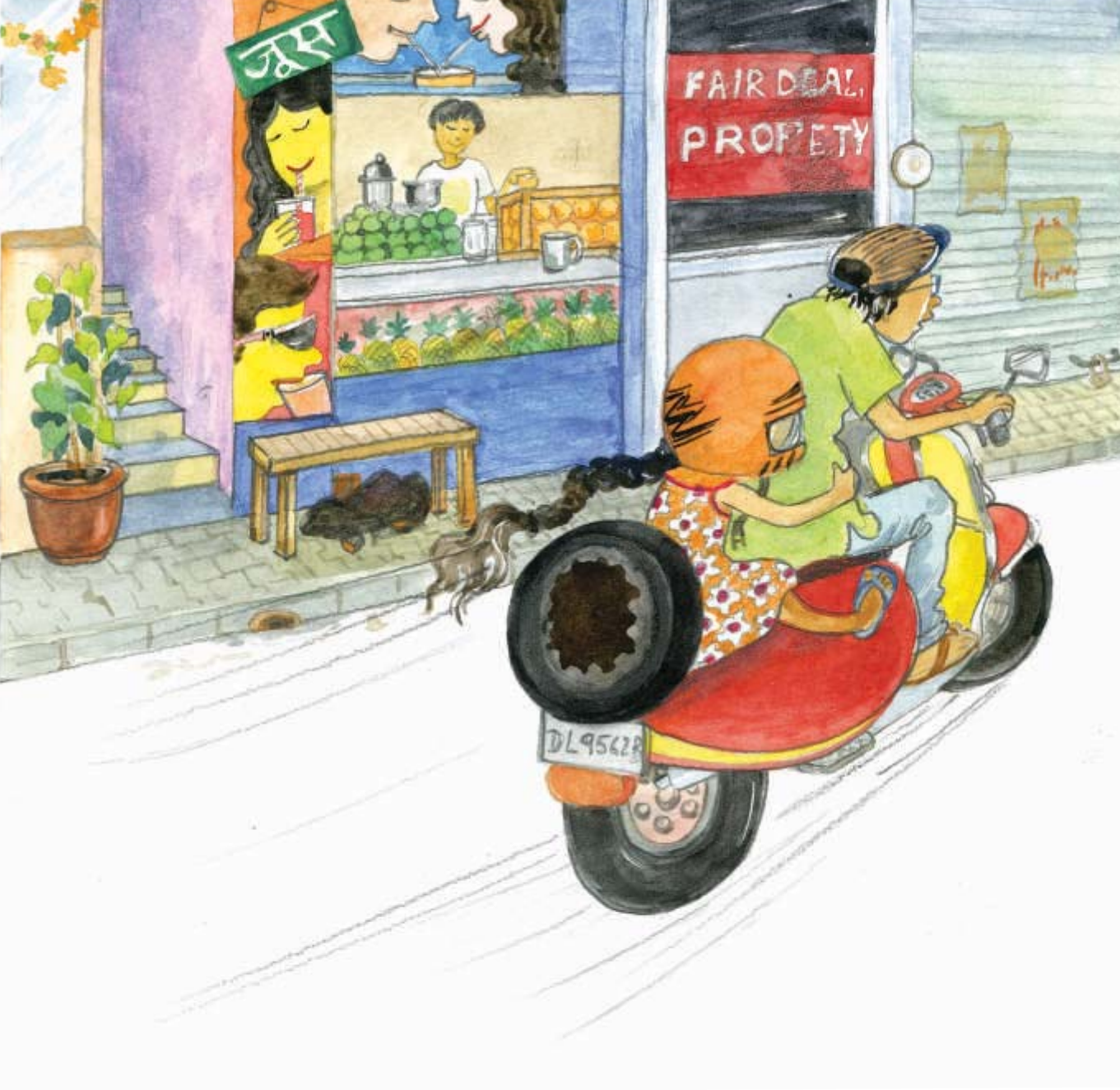

अब क्या था, गुणिया के पापा ने उसको स्कूटर पर बैठाया और अपना हेल्मेट भी पहनाया। और चल दिए गली के नाई के पास। इससे पहले कि कोई पड़ोसी उसके बालों को देखता, नाई ने खटाखट-खटाखट कैंची चलानी शुरू कर दी।

गुणिया सोचने लगी कि अब उसको आराम से सोने को मिलेगा। खेलने का भी समय होगा। उसको अब खुजली नहीं होगी। बच्चे भी अब ना तो उसके बालों को खींचेंगे और ना ही उसे चिढ़ाएँगे। और हाँ! अब ना ही नारियल का तेल घण्टों तक उसके सिर में बू मारेगा!

गुणिया अपने लम्बे बालों की वजह से काफी परेशान रहती थी। गर्मी तो लगती ही थी और पसीना भी खूब आता था। वह ज़्यादा देर तक सो भी नहीं पाती थी। रोज़ स्कूल भी देर से पहुँचती थी और देरी से पहुँचने के कारण उसे रोज़ कोई न कोई बहाना बनाना पड़ता था। लेकिन वो बहाने उन लम्बे बालों से छुटकारा कैसे दिलाते। उसके लिए तो चाहिए थी कोई नायाब तरकीब।

क्या गुणिया वो तरकीब खोज पाएगी?

एकलव्य
मूल्य: ₹ 45.00

parag
AN INITIATIVE OF THE TATA TRUSTS

9 789385 236181